वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता संस्कृत साहित्य के संदर्भ में

[1]सत्यवती चौरसिया
शोधार्थी
[2]डॉ. आशीष तिवारी
पर्यवेक्षक
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर

शोध सारांश

भारत संस्कृति और संस्कृत यह तीनों शब्द मात्र शब्द ही नहीं अपितु प्रत्येक भारतीय के भाव है, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध मूल्य अंतर निहित हैं। भारतीय संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा का समाहित होना परम आवश्यक हो गया है। हमारा देश विश्व गुरु माना जाता रहा और अब पुनः विश्व गुरु बनेगा इसके लिए हमें गुरु शिष्य परंपरा अपनानी होगी। छात्रों को वेद, वेदांग, स्मृति और स्तुति के बारे में सिखाना पड़ेगा। आज छात्रों में संस्कृत साहित्य का पुनः पठन-पाठन करने का अवसर प्रदान करना होगा। अतः प्राचीन ग्रंथों में छिपे इस रहस्यमय ज्ञान के खजाने को खोजने की जरूरत है, जिससे कि मानव का कल्याण हो सके और भारतीय ज्ञान सिर्फ विदेशी ज्ञान तक ही सीमित ना रहे बल्कि इसमें पुनः प्राचीन भारतीय परंपराओं व ग्रंथों को समाहित किया जाये। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के नैतिक मूल्यों और महत्व को पुनर्जीवित करना है। इसके लिए हमें प्राचीन भारतीय संस्कृति शिक्षा पद्धति वेद,पुराणों, उपनिषदों आदि में निहित ज्ञान विज्ञान को स्वीकार करना अति आवश्यक हो गया है। आज प्राचीन भारत में निहित अतिथि देवो, मातृ देवो, आचार्य देवो एवं पितृ देवो की परंपरा को पुनर्जीवित करना आवश्यक हो गया है। आज की बदलती शिक्षा प्रणाली में हम इन तत्वों को पुनर्जीवित कर सकेंगे एवं विकसित भारत के सपने को भी साकार कर सकेंगे। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना हमारी भारतीय परंपरा को गौरांवित करती है। भारतीय संस्कृति में निहित प्राचीन मूल्य जैसे पंच महायज्ञ, षोडश् संस्कार, भारतीय आयुर्वेद पद्धति आदि को सर्वांगीण विकास में सम्मिलित करना अति आवश्यक हो गया है। सुसंस्कृत ज्ञान से ही संस्कारवान समाज का निर्माण संभव होगा। हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा में निहित संपूर्ण वैदिक साहित्य में जैसे-रामायण, महाभारत, पुराण, दर्शन, धर्म ग्रंथ, नाटक, काव्य, व्याकरण एवं ज्योतिष शास्त्र संस्कृत भाषा में समाहित हैं जो भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की पूर्ण रक्षा करने में अग्रसर होते हैं। अतः हमें प्राचीन परंपरा को अग्रणी कर भारत को पुनः विश्व गुरु बनाना है। आज के बदलते सामाजिक परिवेश में भारतीय मूल एवं शिक्षा व्यवस्था को

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

समावेशी बनाना अंत्यत आवश्यक हो गया है क्योंकि एक तरफ तो हम आधुनिकता के दौर से अग्रसर हो रहे हैं वहीं दूसरी तरफ हम अपनी ज्ञान परंपरा को भूलते जा रहे हैं इस स्थिति में हमें संस्कृत साहित्य में निहित अपने उपनिषदों में कही हुई बात स्पष्टत: समझना अति आवश्यक है ऐसा कहा भी गया है, कि यदि नेत्र विहीन को पथ मार्ग दिखाने वाला भी यदि नेत्र विहीन हो तब लक्ष्य की प्राप्ति निश्चित नहीं की जा सकती। इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि यदि हम अपने भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित मूल्यों को समावेशी शिक्षा के साथ ग्रहण नहीं करेंगे। तब हमारे लिए देश को विश्व गुरु तक पहुंचाना कठिन हो जाएगा। आधुनिक भारतवर्ष में अनमोल रतन के रूप में उपलब्ध समस्त ज्ञान प्रेमियों के लिए यह स्थिति एक शोध का विषय बन चुकी है। जिसको संबंर्धित कर भारतीय ज्ञान परंपरा की उपादेयता सिद्ध करना आवश्यक होगा।

बीज-शब्द

भारतीय, ज्ञान परंपरा, वैज्ञानिकता जीवन मूल्य, विकसित भारत।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति प्रारंभ से ही हाथ मिलाने की जगह हाथ जोड़कर अभिवादन एवं बड़ों का सम्मान गुरुओं का आदर, गौ सेवा, कन्या पूजन एवं बुजुर्गों की सेवा आदि करती आई है।' माता भूमि: पुत्रोऽहम् पृथिव्याः। जहां भूमि को माता कहा जाता है वही हम सब उसकी संतान ऐसा कहना हमारे भारत के लिए गौरांवित होने का विषय सदैव से ही रहा है परंतु इन सब के लिए हमारी संस्कृति व प्राचीन ज्ञान परंपरा ही जिम्मेदार है, जिसके प्रमाण होने से ही आज हम विश्व गुरु की ओर प्रेषित हो रहे हैं। हम भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करके ही भारत जैसे विशाल पावन देश में रहना गर्व महसूस कर सकते हैं। हमारे प्राचीन संस्कार ही हमें पृथ्वी को माता मानने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। अर्थात हमें भारतीय परम्परों ने ही यह सिखाया है कि यह पृथ्वी हमारे बोझ को ग्रहण किये है इसी पृथ्वी पर हम सभी अपना जीवन यापन संभव कर पा रहे हैं, अत: हमने अपने बड़ों से यह भी सीखा है कि सुबह जाग कर सर्वप्रथम पृथ्वी को स्पर्श कर नमन करना चाहिए। किंतु आज की पीढ़ी इन परम्पराओं से कहीं न कहीं विमुख होती जा रही है, जिसे पुन: समावेशी शिक्षा के माध्यम से जागृत किया जा सकता है। जिस प्रकार शोध का अर्थ 'रि -सर्च', अर्थात पुनः खोज है उसी प्रकार हमें भी हमारे प्राचीन संस्कारों व संस्कृति को पुनर्जीवित करके हम अपने जीवन में उन्हें समाविष्ट करेंगे। अर्थात हम इस शोध में निम्नांकित बिंदुओं पर चर्चा करेंगे--

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

(1) भारतीय शिक्षा एवं संस्कृत साहित्य का समावेश
(2) भारतीय ज्ञान परंपरा और योग
(3) भारतीय ज्ञान का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

1) **प्राचीन ज्ञान परंपरा और भारतीय शिक्षा**

आज बदलते सामाजिक परिवेश और भारतीय मूल्यों के बीच हमारी शिक्षा व्यवस्था को समावेशी बनाना अति आवश्यक हो गया है। शिक्षा व्यवस्था को समावेशी बनाने के लिए आज हमारे संपूर्ण देश में नई शिक्षा नीति के माध्यम से हम इस तरफ मोड़ दे पा रहे हैं। इस शिक्षा व्यवस्था को भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संस्कृत साहित्य के साथ समाहित करना अति आवश्यक हो गया है। एनआईओएस ने वैदिक शिक्षा संस्कृत भाषा और साहित्य भारतीय दर्शन एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के कई क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित नए कोर्सों की शुरुआत की है।, इन पाठ्यक्रमों में संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी में कई विषयों में बेसिक शिक्षा के अंतर्गत स्व -अध्ययन सामग्री को भी विकसित किया गया है। संस्कृत भाषा विषय को विकसित करने का उद्देश्य रामायण, महाभारत, धर्म ग्रंथ आदि पौराणिक कथाएं शामिल करना है जिससे शिक्षार्थी हमारे समृद्ध भारतीय संस्कृति के, प्रति जागरूक हों, जिससे हम पुनः विश्व गुरु एवं विकसित भारत के सपने को साकार कर सकें। वैदिक शिक्षा से हम शिक्षार्थियों में वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को जागृत कर पाएंगे।

2) **भारतीय ज्ञान परंपरा और योग**

आज समावेशी शिक्षा से शिक्षार्थियों को 'योग' का ज्ञान देने के लिए पाठ्यक्रमों में' योग' शिक्षा को समाहित किया गया है।

'योग 'शब्द की निष्पत्ति युज् धातु से हुई है जिसका अर्थ है जोड़ना अथवा मिलाना। हमें पुनः प्राचीन भारत की शिक्षा जो' सा विद्याया विमुक्तये 'के सिद्धांत पर आधारित थी। आज वर्तमान शिक्षा व्यवस्था केवल 'सा विद्याया नियुकतये' सिद्धांत पर आधारित हो गई है, जिसको समावेशी शिक्षा व्यवस्था में सम्मिलित करके प्राचीन शिक्षा को जोड़कर ज्ञानोन्मुख, मूल्यवान व रोजगारोन्मुख बनाएंगे।

आज की भाग दौड़ एवं संघर्ष वाली दुनिया में व्यक्ति योग के लिए समय नहीं दे पा रहा है। जिससे उसके मानसिक स्तर पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ रहा है और वह मानसिक बीमार हो

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

रहा है। ऐसे में रोग ग्रस्त होने के कारण वह अपनी जीविका एवं अन्य क्रियाकलाप को सुचारू नहीं कर पा रहा है।ऐसे में व्यक्ति को योग का अनुगमन और अभ्यास करना चाहिए जिससे वह शांति प्रदान कर सकेगा एवं विश्व शांति का कारण भी बन सकेगा। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में योग एक अद्भुत अनुभव है यह एक ऐसा वरदान है जिससे मनुष्य की चेतन को वैश्विक चेतना से जुड़ने का अवसर मिलता है। विश्व योग दिवस 21 जून को मानने पर भारत को विश्व से जोड़कर एक पहचान बनाने का मौका मिला है। वेदों के ज्ञान में 'योग 'ज्ञान भी समाहित है जो भारतीय परंपरा के तत्व ज्ञान में भी समाहित है। जिस प्रकार अनेक ऋषि मुनियों ने योग साधना के माध्यम से चित्र को एकाग्र करके मंत्रों के उच्चारण एवं उपासना से अपने बाह्य एवं अंत: करण से अपने शरीर को निरोग मुक्त किया है। इस प्रकार आज हम सब 'योग' साधना से एक विकसित भारत का निर्माण कर सकेंगे। आचार्य पतंजलि ने इसका शास्त्रीय अर्थ "योगाश्चि वृत्ति निरोध:" बताया है। योगी के लिए शरिरस्थ 9 चक्र, 11 आधारों, 3 लक्ष्यों, 5 आकाशों का ज्ञान आवश्यक है।

नव चक्रम् कला धारम् त्रिलक्ष्यं व्योमापंचकम्।
सम्येगतन्न जानाति सा योगी नामधरक: ।।

3) **भारतीय ज्ञान का वैज्ञानिक दृष्टिकोण**

हमारे भारत देश ने ही संपूर्ण विश्व को ज्ञान का आश्रय दिया जीने की कला संस्कृति, वास्तु व ज्योतिष शास्त्र, विमान का ज्ञान दिया, चिकित्सा विज्ञान का ज्ञान दिया। हमारा देश वर्षों से वैज्ञानिक अनुसंधान में अग्रणी रहा है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में हमारे साहित्य ने ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सत्यता से परखा। प्राचीन ऋषि मुनियों ने यह नीव आगे रखी जिससे निरंतर पूरे विश्व पर अपना परचम लहराता रहेगा। परंतु हमारी प्राचीन परंपराओं को हम सभी जानते हुए भी कुछ अज्ञानी लोग विदेशियों की बातों में आकर अपनी ही धरोहर अपनी संस्कृति पर संदेह करते हैं, जबकि हमें अपने देश पर गर्व करना चाहिए और अपनी प्राचीन ज्ञान ज्ञान परंपराओं को विकसित भारत की ओर पुनः अग्रसर करना चाहिए। इस प्रकार हम अपनी परंपराओं को निरंतरता की ओर ले जा सकेंग आधुनिक युग में कई लोग ऐसा सोचते हैं की परंपराएं मात्र लोगों को डराने या कमजोर बनाने के लिए गढ़ी गई हैं, जो व्यक्ति ऐसा सोचते हैं उन्हें इन परंपराओं के पीछे निहित वैज्ञानिक महत्व को जानने व समझने की जरूरत है। ऋषि मुनियों द्वारा प्राचीन काल से इन भारतीय परंपराओं के पालन पर विशेष बल दिया जाता रहा है ऐसा इसलिए नहीं कि वे इस भारतीय समृद्धता को विश्व के सामने लाना चाहते हैं बल्कि इसलिए क्योंकि इनके पीछे कई सारे वैज्ञानिक कारण निहित हैं। जो की मानसिक व शारीरिक

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं, जिसके कारण हम सभी मानसिक रूप से ग्रसित नहीं होती है। आज संपूर्ण विश्व भारतीय परंपरा और संस्कृति के इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण को स्वीकार कर रहे हैं। विज्ञान एवं वैज्ञानिक पद्धति एक दूसरे के पूरक हैं जिनमे साथ-साथ परिवर्तनशीलता की प्रवृत्ति निहित होती है, इसी कारण आज प्राचीन ज्ञान एवम वर्तमान ज्ञान में अधिक अंतर दिखाई देने लगा है, आज परिवर्तित परिवेश के कारण ही हम उसे वैज्ञानिक मानने के लिए तैयार ही नहीं होते हैं, प्राचीन भारतीय ग्रंथों में निहित हमारे वेद, पुराण, महाकाव्य, उपनिषद एवं गीता में संपूर्ण ब्रह्मांड समाहित है। इनको सिद्ध करना विज्ञान का सृष्टि के सात्विक अर्थ को समझाना था ।लेकिन हमारे प्राचीन भारतीय चिंतन की वैज्ञानिकता को २० वी सदी के, प्रारंभ से ही विज्ञान के विद्वानों ने स्वीकार किया। प्राचीन ग्रंथो के मूल तत्वों से आध्यात्मिक एवं वर्तमान समय में विज्ञान एक दूसरे के प्रतिरोधी ना होते हुए पूरक मने जाते हैं, क्योंकि जिस प्रकार अपनी इंद्रियों को एकाग्र करके यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति होती है। उसी प्रकार विज्ञान में भी यथार्थ ज्ञान निहित होता है। अतः दोनों में यथार्थ ज्ञान निहित है। हमारी प्राचीन परंपराएं जैसे तिलक लगाना, प्रणाम करना, कर्णभेद, मुंडन संस्कार आदि,गंगा में अस्थि विसर्जन, झुक कर चरण स्पर्श करना, सायंकाल दीपक जलाना, सूर्योदय से पहले जागना, पृथ्वी को स्पर्श करना, दोनों हथेलियां को मंत्र उच्चारण के साथ आपस में रगड़कर चेहरे पर स्पर्श करना, गाय को घर में रखकर गौ सेवा करना आदि के पीछे बड़ी से बड़ी वैज्ञानिक मान्यताएं हैं इन सभी परंपराओं को युवा व बाल पीढ़ी के समक्ष लाना अति आवश्यक हो गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में अनेक मनीषियों का योगदान रहा जैसे-बोधायन, आर्यभट्ट, कणाद, भास्कराचार्य, सुश्रुत एवं चरक आदि महान विभूतियां जिन्होंने अपने ग्रंथों को विज्ञान से जोड़ा। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित वैज्ञानिकता आज सारे विश्व में चर्चित है। आज भी नामचीन वैज्ञानिकों को यह आश्चर्य होता है कि हजारों वर्ष पहले भारत में इतनी गहन ज्ञान परंपरा कैसे विकसित हो सकी। इस भारतीय परंपरा में ईश्वर अंश जीव अविनाशी जैसा सूक्ष्म दर्शन तथा 'सर्वे भवंतु सुखिनः'जैसी व्यावहारिकता विधमान है जो भारतीयों को वैश्विक दृष्टि दे पाई।स्वतंत्र भारत में देश के समक्ष सभी व्यवस्थाएं छिन्न-भिन्न थी, क्योंकि हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था पर विदेशी हुकूमत का राज हो गया था। गरीबी, अशिक्षा जैसी चुनौतियों का सामना देशवासियों को करना पड़ा। किंतु हमारी भारतीय परंपराओं के ज्ञान के सागर ने हमारे भारत के युवाओं में श्रेष्ठ ज्ञान को समाहित कर विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाई आज भारत में 21वीं सदी में संचार तकनीकी एवं शोध संस्थानों में हमारे देश ने ऐसा स्थान हासिलकर लिया है, जो सारे विश्व में एक मिसाइल के रूप में सराहनीय है।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

निष्कर्ष

प्राचीन भारतीय परंपराओं में गुरु व शिष्य परंपरा प्रमुख मानी जाती है, आज आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी हम प्राचीन भारतीय परंपराओं को समाहित करके पुनः गुरु व शिष्य परंपरा को देख सकेंगे। आज हमारी भावी पीढ़ी, जो अपने प्राचीन धार्मिक ग्रंथों, पुराणों, वेदों एवं साहित्य से विमुख हो रही है, उसे हम पुनः राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में सम्मिलित कर सकेंगे। हमारी आने वाली पीढ़ी शिक्षा तो प्राप्त कर ही सकेगी साथ ही उनमें नैतिक मूल्यों का भी विकास संभव हो सकेगा। वर्तमान में शिक्षार्थी शिक्षा तो प्राप्त कर रहे हैं लेकिन उनमें कहीं ना कहीं नैतिक मूल्य, धार्मिक विचारधाराओं का पतन होता नजर आ रहा है। सच तो यह है कि वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली हमारी संस्कृति पर आधारित थी और संस्कृति से हम अलग नहीं हो सकते वैदिक काल की भांति हम आज भी समस्त ज्ञान -विज्ञान, कौशल और तकनीकी को शिक्षा की पाठ्यचर्या में सम्मिलित करना चाहते हैं, आज हम प्राचीन भारतीय परंपराओं को आधुनिक शिक्षा में पुनः एक बार जोड़कर भारतीय संस्कारों व संस्कृति को स्थापित कर सकेंगे। आज हम वैदिक कालीन शिक्षा के ग्रहणीय तत्वों को ग्रहण कर अपनी वर्तमान शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाने का प्रयत्न करेंगे एवं देश को विश्व गुरु बनाएंगे। हम श्रेष्ठ भारत में "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना को जागृत कर विकसित भारत का निर्माण करेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पंडित मधुसूदन ओझा भारतवर्ष द इंडियन नरेटिव ऐज टोल्ड इन इंद्र विजयाह, रुपा 2017
2. मिश्र, जयशंकरः प्राचीन भारत का इतिहास, पृष्ठ 667
3. मनुस्मृति।
4. अर्थवेद १२/१/१२
5. योगांक, गीता प्रेस, गोरखपुर,14 संस्करण, पृष्ठ 130
6. स्वामी दिव्यानंद सरस्वती, वेदों में योग, यौगिक शोध संस्थान, योग धाम, आर्य नगर, ज्वालापुर, हरिद्वार पृष्ठ 51
7. पतंजलि योग सूत्र 1.2
8. वैदिक ज्ञान विज्ञान कोर्स आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पृष्ठ संख्या 489